Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

डॉ. हरिशरण वर्मा के नाटकों में सामाजिक युगबोध

Nisha Kumari*

Assistant Professor in Hindi, Kanya Maha Vidyalya Kharkhoda, VPO - Marout, Tehsil- Matanhail, District- Jhajjar, State- Haryana

सार – सामाजिक युगबोध की अर्थ एंव परिभाषा को समझने से पहले हमें युगबोध का अर्थ समझ लेना चाहिए। युग+बोध यह दो शब्दो के मेल से बना है कुछ तो मानते है की पूर्ण शब्द का अर्थ एक ही है लेकिन यह शब्द एक दूसरे के पूरक होते हूए एक-दुसरे से भिन्न है जैसे युग शब्द का अर्थ यदि पाश्चात्य या अंग्रेजी मे देखा जाए तो टाईम, पीरियड़ तथा 'एंज' कहा जाता है अंग्रेजी साहित्य में किसी साहित्य प्रवृति के बने रहने तक के टाईम को 'एज' कहा जाता है। "युग काल- प्रभाव का एक भाग है जो किसी न किसी रूप में जुड़ा है। आचार्य रामचन्द्र वर्मा के कोष में भी यही अर्थ है"1- इसका अर्थ 'बृहस्पति' का एक राशि में स्थिर रहने को पंचवर्शीय काल भी होता है।

---------------------------------x---------------------------------

युग की तरह बोध का भी अपना अलग स्वरूप है बोध शब्द संस्कृत की 'बुध' धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना। अंग्रेजी में बोध के पर्याय है अवेयर नेस Awareness, सेंसिबिलिटि Sensibility "बोध शब्द के विषय में यह द्रष्टव्य है – 'बोध' (प्र0) (बुध धातू+ घञ्) जानकारी। ज्ञान विचार। बुद्धि। समझ। जागृति। सांत्वना। खिलना। निर्देश। उपाधि। संज्ञा।" 2- सरल शब्दों में बोध का अर्थ - अनुभव करना या महसुस करने से भी लिया जाता है। बोध का अर्थ से अभिप्रायः किसी भी वस्तू का 'बोध' अथवा उससे परिचित होना या उससे परिचित होना या उसके ज्ञान से अभिभूत कराना ।

समाज का अर्थ एंव परिभाषा-

व्यक्ति समाज की सुक्ष्तम इकाई है इनको अलग करके नही देखा जा सकता है इनका एक दुसरे से गहरा सम्बन्ध होता है समाज को देश की रानैतिक, आर्थिक, समाजिक स्थिति आदि प्रभावित करती है। स्वन्त्रता से पुर्व हमारी सामाजिक स्थिति अलग थी लेकिन अब हम अपने भाग्य के विधाता स्वयं बने है समाज से कटकर मनुष्य का कोई अस्त्तिव नही होता है समाजिक चेतना द्रष्टि इस बात की तरफ ध्यान आकर्शित किया जाता है कि समाज में मूल चेतना क्या थी आज समाज के सामने इतनी गहन समस्याए है जो समाज की प्रगतिशीलता में रोक लगाती है।सामाजिक स्थिति से कमजोर होना अनेक ऐसे पहलु है जो समाज को निरन्तर पतन की ओर धकेल रहे है। जैसे आज भी हमारा समाज पितृसत्तामक होने के कारण नारियों को दोयम दर्जे का स्थान दिया जाता है। जबकि पुरूशों को सम्मान भरी द्रष्टि से देखा जाता है। आज आधुनिकता में थी हमारे समाज की ऐसी स्थिति है यह सभी नकारात्मक पहलु समाज को प्रभावित करते है। जो सामाजिकता को विघटित करते है। साहित्यकार तो समाज के केन्द्र मे होता है तो वह भला कैसे सामाजिक परिस्थितियों से अपरिचित रह सकता है समाज में जो घटनाए घटित होती है वह अपनी छाप रचनाकार पर अवष्य छोडती है। वह किसी न किसी तरह उनसे प्रभावित हुए बिना नही रह सकता। वह समाज के हर नकारात्मक पहलु को उठाता है समाज के समक्ष रखता है। उन्ही सफल नाटककारों मे है एक डॉ. हरिशरण वर्मा जी है। जिन्होने अपनी लेखनी की ताकत से समाज को प्रभावित करने वाले अच्छे व बुरे पहलुओं को अपने नाटकों में उठाया है। उनके नाटकों में दहेज की समस्या, गरीबी की समस्या, बेरोजगारी, बढती जनसंख्या, नशा लतखोरी, त्याग भावना आदि सजग पहलुओं को उठाया है। और समाज को सचेत किया है। क्योकि साहित्यकार ही ऐसा मनुष्य होता है कि समाज से निरन्तर प्रभावित होकर समाज के हर पहलू को उछालता है समाज की इन्ही गतिविधियों को समाजिक युगबोध कहते है। परिवार समाज व देश की महत्तवपूर्ण इकाई है। परिवार की महत्तवपूर्ण ईकाई मनुष्य होता है। जो एक दुसरे पर आधारित होते है मनुष्य अपनी जरूरते, सीखना, पढना, जिम्मेदारियां, सुख-दुख समाज से ग्रहण करता है मनुष्य समाज या परिवार में महत्तवपूर्ण भूमिका निभाता है परिवार का आधार विवाह है जिस बूदं-बूदं करके सागर बनता है उसी प्रकार परिवारों से समाज का संगठन होता है भारतीय समाज में पहले से ही सयुक्त परिवार के

www.ignited.in

सदस्यों की इच्छाए, आकाक्षाएं घर के मुखिया की इच्छाओ पर आधारित होती है इसका कारण यह था की संयुक्त परिवार में कुछ बेरोजगार सदस्यों का भी गुजारा हो जाता है। आज व्यक्ति आजाद रहना चाहता है परंपरागत पारिवारिक मूल्यों में विघटन आने के मुख्य कारण व्यक्ति में स्वतंत्रता की भावना है। आज अधिकांश मनुष्य गावों को छोडकर नगरो मे रहना चाहते है कस्बों का नगरीकरण हो जाने से भी परिवारों का विघटन होता जा रहा है। ज्यों-ज्यों व्यक्ति सामाजिक क्षेत्र विस्तृत होता जाता है त्यों-2 पारिवारिक क्षेत्र संकुचित होने भावना होती है। डॉ. हरिशरण वर्मा जागरूक नाटककार है। आज में संयुक्त परिवारो के टुटने एंव उनसे जुडी अन्य प्रवृत्तियोंको उन्होने देखा एंव अपने नाटकों प्रस्तुत किया है जो भी समाज में पारिवारिक घटनाए घटित हो रही थी। उन्होंने सभी समस्याओं को अपने नाटको में उजागर किया और प्रत्येक समाजिक समस्या को वर्मा जी प्रस्तुत किया है। एक अच्छा कलाकार या नाटककार समय-2 पर अपनी सफल कृतिया समाज के बिगडते हालातों को अपनी कृतियों या नाटकों के सहारे उजागर करके वर्शो से साहरे उजागर करके वर्शो से सोए हुए या गर्त के विशयों में दबे हुए व्यक्तियों को जाग्रत करते है। क्योकि देश समाज प्रगति कि ओर है। आज वैजानिक तकनीक ने हर कार्य को आसान कर दिया। प्रत्येक व्यक्ति शान शौकत में डूबता जा रहा है कि पीढियों को रिती रिवाजों को भुलाकर विदेशी शान शौकत में डूबता जा रहा है हर समय बदलाव है इन्ही बदलाव व बदलती रीति रिवाजों को साहित्यकार अपनी कृतियों में उजागर करके समय यानी हर युग का बोध कराते है। देखा जाए तो यही युगबोध वर्मा जी भी सफल नाटककारों में अपना स्थान मानते है उन्होंने ने भी साहित्य के क्षेत्र में अपनी सफल लेखनी दवारा समाज की बिगडती हालत चाहे बढती जनंसख्या हो या छुआछूत आदि गंभीर विशयों पर अपनी सफल लेखनी चलाई है।

आज वर्तमान युग से लेकर बीते युग तक देश की महत्वपूर्ण इकाई परिवार माना जाता हैं मनुष्य इसके केन्द्र मे होता है पहले समय से लेकर आज तक की तुलना में अधिक विघटन की और जा रहा है। प्रस्तुत नाटक 'गृह लक्ष्मी' मे वर्मा जी दिखते है कि कृष्णा विदेशी जीवन जीते हुए आजाद नारी का जीवन व्यतीत करने के लिए वह अपनी घर परिवार की जिम्मेदारियों को छोडकर थोडे से पैसे की नौकरी करती है घर पर छोटे लडके को नौकरानी के बहाने छोडकर नौकरी पर जाती है कृष्णा व हरिश इन सभी स्थ्तीयों से परेशान होकर लडाई झगडा करते है। क्योकि आज के स्वतंत्र युग में आए बदलाव के कारण स्त्रियाँ स्वंतत्र होना चाहती है लेकिन स्त्री की बढती आकाक्षांए परिवारों को विघटन की ओर लेके जा रही हैं। क्योकि स्त्री घर की लक्ष्मी होती है। हां वह बाहर घुमे फिरे लेकिन उसकी जिम्मेदारी होती है क्योंकि वह परिवारों के विघटन का मुख्य कारण होती है। उक्त कथन के दौरान डॉ. हरिशरण जी यह दिखाना चाहते है कि कैसे परिवार विघटन की तरफ जाते है जब हरिश कृष्णा से कहता है कि तुम्हे नौकरी की चिंता क्यो है। मेरे पैसो से काम नही चलता है। तब कृष्णा कहती है कि "सवाल रुपयों का नही बस अपने कैरियर और शौंक का है" 3- अतः स्पष्ट होता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर परिवार को दांव पर लगाकर अपनी दिखावटी शान शौकत को दिखाने के लिए लगे हुए है। जिससे न जाने कितने परिवार विघटित हुए होते है न जाने कितने ही ऐसे कारण है जो समाज को पतन की और ले जाते।

परिवार व मनुष्य देश समाज के केन्द्र मे होते है। महत्वपूर्ण इकाई होते है समाज की। इन सबका आधार विवाह है आज इस युग की महत्वपूर्ण समस्या है अत जातीय विवाह न जाने कितने ही परिवार ऐसे है जो इन समस्याओ के कारण टुट रहे है क्योंकि आज इस शिक्षित समाज लडके व लडकिया अपने भले बुरे का फैसला खुद लेते है। यही सब वर्मा जी अपने नाटको के माध्यमो से प्रदर्शित करना चाहते है क्योंकि समाज के हर बुरे व अच्छे पहलु को एक साहित्यकार ही अपनी कृतियों के द्वारा रु-ब-रु करता है पहले के समय से अब देखा जाए तो बहुत बदलाव हो चुके है। पहले समय शादी विवाह के फैसले घरवाले करते थे लेकिन अब रुढ़िवादी परम्परा मानकर इन सभी नियमों नकार दिया गया है इन रुढ़ियों को करारा व्यंग्य करते हुए वर्मा जी ने 'वचन' नाटक का निर्माण किया। इनमें अंतरजातीय विवाह समस्या को गंभीरता से दर्शाया गया हैं क्योंकि आज सभी को समान अधिकार मिले हुए है। कोई किसी से कम नही है सभी की अपनी पहचान हैं। सभी अपनी मर्जी के मालिक है लेकिन यह जात-पात के बधंन, भेदभाव, छूआछूत आदि इंसान की इच्छाओं पर अकुंश लगाते है शक्ति को भेदभाव की रणनीति का शिकार बनाते है। आज इसी भेदभाव के कारण लोग एक दूसरे के जान के प्यासे हो गए। क्योंकि छुआछुत ऐसी बिमारी है जो समाज को निरन्तर खौखला कर रही हैं क्योंकि ऐसे विकार लोगों की संकुचित सोच के कारण फैलते है। क्योंकि समाज में मनुष्य को उसकी जाति से उसके विचारों से पहचानना चाहिए। क्योंकि उच्च कुल तो ब्राहमण भी जन्म लेते है लेकिन ये इतने ढोंगी और नीच कार्य करते है एक छोटी से छोटी जाति का मनुष्य भी नही करता है। मनुष्य की पहचान उसके कर्म से करना चाहिए। वर्मा जी 'वचन' नाटक की पात्र प्रिया व नितिन एक कक्षा में पढते है और एक दूसरे से बहुत प्यार करते है लेकिन नितिन ब्राहमण व प्रिया नीच जाति की लड़की हैं। जिसके कारण उनकी शादी में बाधा आती है लेकिन प्रिया नितिन को वचन दे चुकी होती है कि वह उसी से शादी करेगी उक्त कथन

"नितिन हां प्रिया घर जाकर मुझे भूल तो नही जाओगी"4। उक्त कथन इस बात की तरफ संकेत करता है प्रिया व नितिन समाज की परवाह न करते हुए एक दुसरे को वचन दे चुके होते है समाज चाहे कुछ भी हो लेकिन इस नाटक के दौरान, वर्मा जी यह प्रस्तुत करना चाहते है कि यदि नितिन प्रिया जैसे अनेकों नवयुवक दिल से शादी के रिष्ते निभाएगें तो इस समाज की आँखों से छूआछूत का पर्दा हटाया जा सकता है। समय पर यही बदलाव नए युग का निर्माण कर सकते है यही इस नाटक मे सच्ची मित्रता को प्रदर्शित किया है।

देश समाज कितनी तरक्की कर ले लेकिन गरीबी, छूआछूत, जाति प्रथा आदि समस्याएँ समाज की बढती प्रगति में बांधा डालती है। जो समाज, देश के नकारात्मक पहलू होते है। आज गरीबी भी ऐसे घने विकारों मे से एक पहलू है जो समाज की बढती प्रगति में बाधा डालती है। जो समाज को प्रभावित करते हुए निंरतर चिपकी रहती है। इस देश समाज गांव मे हर तरह कि प्राणी हमे देखने को मिलते है। किसी पास इतना पैसा होता है कि उसे लगाने के बारे मे सोचता हैं किसी की ऐसी हालत होती है कि दो वक्त के खाने के लिए भी सोचना पडता है हर तरह का समाज होता है उसमें हर तरह व्यक्ति होते हैं। जो गरीब भी होते है और अमीर भी। तो समाज में ये चीजे बराबर चलती है। यह समस्या देश की सबसे बडी समस्या है। कोन जाने कितने ही लोग भुख से बेहाल होकर कितने व्यक्ति मौत के मुंह में चले जाते है न जाने कितने ही व्यक्ति कुपोषण का शिकार होते है। कुछ इसी प्रकार की समस्याओं को वर्मा जी अपने नाटको में प्रदर्शितकर समाज की सबसे बड़ी कमजोरी को प्रतिपादित किया उनके द्वारा रचित सफल नाटक 'छोटी सी भूल' व 'बीस हजार' में अनेको समस्या दहेज की समस्या, जनसंख्या की समस्या, सुशिक्षित नारी आदि अच्छा व बुराई को बराबर दिखाया है। लेकिन इसी बीच गरीबी पर द्रष्टि डाली गयी है। वर्मा जी के प्रसिद्व नाटक छोटी सी भूल आदि नाम तो हरिशरण वर्मा ने बढती जनसंख्या के ऊपर रखा गया। लेकिन जब इसके पात्र रामचरण के सात लड़किया है लेकिन उसकी तनख्वाह 9000 है जब वह अपनी बेटी की शादी करना है तो उससे दहेज में पैसे मागें जाते है लेकिन वह न दे पाने के कारण वैन से चोरी करता है। क्योंकि गरीबी व्यक्ति से कुछ भी करवा देती है। क्योंकि वह मनुष्य पर इतनी हावी होती है कि मनुष्य की मनुष्यता को समाप्त कर हर बुरे कार्य की तरफ धकेलती है। आज समाज में हर तरफ गरीबी से तंग आकर व्यक्ति कितनी बुराइयो का शिकार होता है। क्योंकि यह ऐसी बीमारी है जो मनुष्य को सोचने नही देती जिसकी जितनी आय होगी उसका रहन सहन वैसा ही होगा आय के अनुसार ही अपने बच्चे की जरूरतों की पुरा कर पाएगा डॉ. हरिशरण वर्मा जी अपने नाटको में उक्त कथन के द्वारा प्रस्तुत किया है। "पिता जी मुझे इस महीने 50 रूपये ज्यादा चाहिए वे किस लिए बेटी मेरी सहेलिया मुझे हमेशा पार्टी देती है पिक्चर दिखाती है। परसों मेरा जन्मदिन है उन्हें पार्टी दूगी और पिक्चर दिखाऊगी"5। प्रस्तुत कथन से यह साबित होता है की रामशरण अपनी आय कम होने के कारण बच्चो की जरूरतें पूरी नही कर पा रहा था। घर का लेन-देन से लेकर खाने-पीने तक सब आय पर आधारित होता था। क्योंकि हर समय महंगाई बढती है जरूरतें बढती है लेकिन आय तो सरकार दवारा बढाई जाती है। लेकिन जरूरतों के अनुसार नही क्योंकि आज समाज में हर उस ऐसो आराम एक अमीर व्यक्ति के भाग्य में होते है जो गरीब को तो सोचना भी पाप होता है। यही सभी स्थितियां हरिशरण वर्मा जी अपने नाटकों के माध्यम से दर्शाना चाहते है क्योकि उनके नाटक 'बीस हजार' में गरीबी को हावी होते हुए दिखाया गया है। क्योकि हर माता-पिता चाहते है कि उसकी बेटी कि शादी अच्छे परिवार में हो। जो गरीबी आर्थिक तंगी पीछे घर में देखने को मिली है वे आगे ना मिले ऐसे ही बीस हजार नाटक में समस्या को दर्शाया गया है। शारदा की शादी के समय उसकी दहेज की मांग तो पूरी कर दी जाती है। लेकिन बीस हजार बकाया रह जाता है जिसके रहते हुए वे शारदा को दुखी करते है। और का पति दूसरी शादी कर लेता है। और उसे मरने के कगार पर पहुंचा देते है। क्योकि व शादी के समय जो उसके मां बाप ने बीस हजार रूपये देने का वादा किया था लेकिन व आर्थिक तंगी के चलते पैसे नही दे पाते जिसके कारण वे शारदा को घर से निकाल देते है वह उसे यहा तक भी मजबूर कर देते है कि तुम अपने माता-पिता से तब मिलेगी जब बीस हजार अदा कर देगे "क्योकि बीस हजार की बकाया अदायगी के बाद ही तुम अपने मां बाप से मिलगे जा सकती"6। लेकिन उसके मां बाप ने सेठ करोडीमल से शादी के वक्त जो कर्जा ले रखा था जिसके कारण अधिक ब्याज हो जाता है। उनका मकान नीलाम कर दिया जाता है। जिसके कारण इस हादसें में शारदा के मां बाप मर जाते है। अतः वर्मा जी इस नाटक के माध्यम यही दिखाने चाहते है की न जाने कितने ही लोग गरीबी के कारण आत्महत्या करने के लिए मजबूर होते है जो न चाहते हुए भी इस समाज से अलविदा लेकर गरीबी से छुटकारा पाते है। क्योंकि पैसे की तंगी के कारण मनुष्य पर कर्ज इतना हावी हो जाता है कि वह चैन की साँस नही ले पाता। पैसे लेने वाले इतना तंग करते है कि जिसके कारण मनुष्य मर के ही मुक्ति पाता है। आज एक विकसित व प्रगतिशील देश के सामने गरीबी एक महत्तवपूर्ण समस्या है। आज देश के सामने अनेकों समस्याए ऐसी जो उनके सामाजिक विकास में बाधा डालती है बढती समस्याओं मे से एक जो समाज की पर अकुंश लगाती है बढती

www.ignited.in

जनसंख्या समाज को गरीबी की तरफ धकेलती है। यह समस्या ऐसी है जो समाज को निरन्तर खोखला बना रही है। क्योंकि आए दिन समाज में इतनी घटनाए घटती है लेकिन सरकार द्वारा उन्हें नजर अंदाज कर दिया जाता है। लेकिन बड़ी हो या छोटी वह समाज को प्रभावित करती है। उस पर बुरा प्रभाव डालती है आय के साधन कम होने के कारण व घर की आर्थिक स्थिति खराब होने कारण न बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पाते है। न ही शादी-विवाह अच्छी तरह कर पाते है। क्योंकि यह समाज एक चैन है जो हर समस्या एक दुसरे को जकड़े हुए है। क्योकि जनसंख्या बढ़ती है बेरोजगारी बढ़ती है। तो गरीबी होती है क्योंकि जब मनुष्य गरीब होता है तो वह उससे छुटकारा पाने के लिए हर हद तक जाने के लिए मजबूर हो जाता है। वह हर बुरे से बुरे कार्य करने लिए तैयार हो जाता है आज वैसा समाज की ऐसी अनमोल चीज है जिसे पाने के लिए मनुष्य एक दूसरे की जान के प्यासे बने हुए है भाई - भाई का दुश्मन बन गया है। बढती बुराईयों की जड़ यह पैसा ही है जो सभी समस्याओं को समेटे है। इन सभी समस्याओं का डॉ. हरिशरण जी ने अपने नाटकों में दर्शाया है जो देश की गंभीर समस्या जनसंख्या की समस्या आदि नाटक में दिखाया है। इन नाटकों के माध्यम से रचनाकार ने केवल नाटक से समस्या ही नही बल्कि उसका निवारण भी दिखाया गया है क्योकि जो उनका नाटक है 'छोटी सी भुल' यानि गलती के कारण ही तो वह सात बेटियों को जन्म देता है आय कम व परिवार में सदस्य ज्यादा के कारण उनके पालन पोषण की बात आती है तो उन्हे कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वर्मा जी यही बताना चाहता है कि यदि वह एक या दो ही बेटी पैदा करता तो उसे उनका लालन पालन व शादी विवाह के लिए चोरी न करनी पड़ती। क्योकि जब रामचरण दास अपनी बेटी सुधा का रिश्ता प्रवीन कें साथ तय किया। लेकिन विवाह के लिए पैसे नही होते। तब वह बैंक वैन में चोरी करता है" हाँ, जज साहब अपनी संतान की खुशी के लिए कोई दुसरा रास्ता दिखाई दे रहा था। सात बेटियां जो एक के बाद एक जवान होती जा रही थी और मेरे पास इनके दहेज के लिए पैसे नही थे 7" उक्त कथन यह साबित होता है कि आर्थिक तंगी के कारण घर में ज्यादा बेटिया होने से उसकी तनख्वाह के पैसे घर में उनके लालन- पालन में खर्च हो जाते थे। यदि दो बेटियां होती तो वह उनका खर्चा उठाने में समर्थ होता। क्योकि यदि में सदस्य आपके अनुसार हो तो उनका लालन पालन अच्छी तरह से हो सकता है। वर्मा जी ने अपने नाटको के माध्यम से यह दर्शाया है कि बढती जनसंख्या की समस्या भी समाज के उपर नंगी तलवार की भांति लटकर ही है। जो निरंतर समाज प्रभावित कर रही है। आज महंगाई में दो बच्चों का भी पढाई खर्च बहुत हो जाता है वर्मा जी इन नाटकों के माध्यम से दर्शाना चाहता था। क्योकि जरूरी नहीं चार-पाँच बच्चे ही मिलकर कोई अच्छा कार्य करें लायक एक भी हो तो नाम रोशन कर सकता है। क्योंकि ज्यादा बच्चों के कारण हम उनकी जरूरतों की पूरा नही कर पातें। आज महंगाई के कारण स्कूलों कि इतनी फीस है की एक या दो बच्चें की ही पढाई पूरी करवा सकते है ज्यादा बच्चों का पालन पोशण ठीक तरह से नही हो पाता जिससे वह पिछड़ जाते है। ये हमारी भूल होती है कि अकेला आदमी कुछ नही कर सकता। क्योंकि यदि एक भी बच्चे को अच्छी शिक्षा व परिवेश मिले तो वह भी कुछ करके दिखा सकता है। क्योकि जितना प्रकाश अकेला चन्द्रमा दे सकता है अन्य नहीं। अकेला चन्द्रमा रात के गहन अंधकार को चीरकर रोशनी करता अर्थात अकेला ही समस्त संसार को प्रकाशित करता है इसी तरह वर्मा जी ने अपने नाटकों के माध्यम से दिखाया है कि आय के साधन कम होते हुए हम परिवार में अनेकों यानि दो-चार कभी-कभी एक व्यक्ति के सात बच्चे भी देखने को मिलते है। वे ज्यादा बच्चे कई बार इस भ्रम में भी पैदा करता है कि कोई कुछ बनेगा तो कोई कुछ लेकिन वह उनकी भुल होती है और यही भुल समाज को पतन की ओर धकेलती है क्योकि बढती जनंसख्या बेरोजगारी, गरीबी आदि समस्याओं को पैदा करती है वर्मा जी ने अपने नाटकों के माध्यम से इन्ही समस्याओं की ओर प्रकाश डाला है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. स0. रामचन्द्र मानक हिन्दी- कोग, खण्ड चार प्रष्ठ-144
2. डॉ. मंजुलता सिंह, हिन्दी कहानियों में युगबोध , प्रष्ठ -2
3. डॉ. हरिशरण वर्मा, गृह लक्ष्मी, प्रष्ठ. 11
4. डॉ. हरिशरण वर्मा, वचन, प्रष्ठ. 57
5. डॉ. हरिशरण वर्मा, छोटी सी भूल प्रष्ठ. 31
6. डॉ. हरिशरण वर्मा, छोटी सी भूल प्रष्ठ. 75
7. डॉ. हरिशरण वर्मा, छोटी सी भूल प्रष्ठ. 34

Corresponding Author

Nisha Kumari*

Assistant Professor in Hindi, Kanya Maha Vidyalya Kharkhoda, VPO - Marout, Tehsil- Matanhail, District- Jhajjar, State- Haryana